संस्कृति मंत्रालय
MINISTRY OF
CULTURE

सत्यमेव जयते

भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार

न्यूज़लेटर

जनवरी-मार्च • तिमाही • अंक- 3

चीनी (Cheeni): पनियन जनजाति का पारंपरिक वाद्य यंत्र

चीनी केरल के वायनाड क्षेत्र की पनियन जनजाति द्वारा उपयोग किया जाने वाला एक पारंपरिक वायु-वाद्य (फूंक से बजाया जाने वाला) यंत्र है। यह प्राय: लकड़ी या बाँस से निर्मित होता है। इसका शरीर पतला और लंबाकार होता है तथा इसकी ध्वनि तीखी और प्रभावशाली होती है।

यह वाद्य यंत्र अपनी बनावट के आधार पर मुख्यत: तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है। पहला भाग **मुखपीस (माउथपीस)** होता है, जिसके माध्यम से वादक इसमें फूंक मारता है। दूसरा भाग **मध्य नली** है, जिसमें विभिन्न स्वरों को उत्पन्न करने के लिए कई छिद्र होते हैं। वादक इन छिद्रों को अपनी उंगलियों से नियंत्रित कर अलग-अलग सुर उत्पन्न करता है। तीसरा भाग **फनलनुमा या घंटी के आकार का अंतिम छोर** होता है, जो ध्वनि को फैलाने और उसे अधिक स्पष्ट तथा तेज बनाने में सहायक होता है। यह विशेष संरचना इसे ऊँची तथा दूर तक पहुँचने वाली ध्वनि उत्पन्न करने में सक्षम बनाती है।

यह एक पवित्र वाद्य यंत्र है, जिसे प्राय: जनजातीय घरों की छत की कड़ियों (राफ्टर्स) में सुरक्षित रखा जाता है। चीनी सामुदायिक अनुष्ठानों में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, विशेषकर अंतिम संस्कार तथा ***कम्बलक्कलि*** (फसल उत्सव) के दौरान। इसकी तीव्र और भावपूर्ण ध्वनि को जीवित लोगों और उनके पूर्वजों के बीच संबंध स्थापित करने वाला माना जाता है तथा यह पारंपरिक समूह नृत्यों के लिए संगीत प्रदान करता है।

'चीनी' नाम 'शहनाई' से व्युत्पन्न माना जाता है और यह विशेष रूप से ***चीनी मुथु*** (Cheeni Muttu / मुथुम विलि) नामक पारंपरिक संगीत-नाट्य से संबंधित है। यह कला रूप मालाबार क्षेत्र में त्योहारों और मेलों के दौरान लोकप्रिय है, जहाँ इस वाद्य को ***ओट्टा*** जैसे ताल वाद्यों के साथ बजाया जाता है।

संदेश

भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण ने वर्ष 2026 की प्रथम तिमाही की अत्यंत रचनात्मक और गुणवत्तापूर्ण शुरुआत की। इसके अंतर्गत चल रही राष्ट्रीय परियोजनाओं-जैसे ''स्मार्ट इंडिया में स्वस्थ एवं सफल वृद्धावस्था का अन्वेषण (EHSAS)'', ''भारत के विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों (PVTGs) में आंत्र सूक्ष्मजीव जीनोमिक अध्ययन'', तथा ''जल जीवन मिशन (JJM) के माध्यम से ग्रामीण भारत में परिवर्तनकारी बदलाव''-में उल्लेखनीय प्रगति देखने को मिली। एहसास टीम ने फरवरी 2026 में पांडिचेरी विश्वविद्यालय में आयोजित भारतीय राष्ट्रीय मानवविज्ञानी परिसंघ एवं अकादमी (INCAA) के वार्षिक सम्मेलन में अपने कार्य प्रस्तुत किए। साथ ही, भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण के पश्चिमी क्षेत्रीय केंद्र, उदयपुर में बाहरी विद्वानों की सहभागिता के साथ एक कार्यशाला भी आयोजित की गई। इसी प्रकार, पुरामानवविज्ञान (Palaeoanthropology) टीम ने भी INCAA सम्मेलन के विशेष सत्र में अपने निष्कर्ष प्रस्तुत किए। मार्च 2026 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (BHU) में ''पुरामानवविज्ञान और जनसंख्या जीनोमिक्स अनुसंधान'' पर दो दिवसीय सहयोगात्मक संगोष्ठी आयोजित की गई, जिसमें देश-विदेश के प्रतिष्ठित विद्वानों, शोधकर्ताओं और शिक्षाविदों ने भाग लिया। यह संगोष्ठी जैविक मानवविज्ञान और जनसंख्या जीनोमिक्स जैसे तीव्र गति से विकसित हो रहे क्षेत्रों में अंत:विषय संवाद को प्रोत्साहित करने और भविष्य में सहयोगात्मक संभावनाओं की खोज के लिए एक महत्वपूर्ण मंच सिद्ध हुई।

राष्ट्रीय परियोजना ''जल जीवन मिशन (JJM) के माध्यम से ग्रामीण भारत में परिवर्तनकारी बदलाव: मानवविज्ञान के दृष्टिकोण से सामाजिक प्रभाव मूल्यांकन'' के अंतर्गत ओडिशा, कर्नाटक, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश के विभिन्न जिलों में क्षेत्रीय अध्ययन (फील्डवर्क) किए गए। इसके अतिरिक्त, ''भारत की शैलकला विरासत, विशेष संदभ: बस्तर'' नामक क्षेत्रीय परियोजना के अंतर्गत बस्तर क्षेत्र में भी फील्डवर्क संपन्न किया गया। भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण ने पोर्ट ब्लेयर में ''पराक्रम दिवस 2026'' का भव्य आयोजन किया। इस अवसर पर नेताजी की प्रतिमा पर हवाई पुष्पांजलि, विशाल संगीत कार्यक्रम, ड्रोन शो, प्रदर्शनियाँ, लोक सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ, पारंपरिक खाद्य स्टॉल, संगोष्ठियाँ तथा पुस्तक प्रदर्शनियाँ आयोजित की गईं। तीन दिवसीय इस समारोह में पोर्ट ब्लेयर और आसपास के क्षेत्रों से लगभग बीस लाख लोगों ने भाग लिया। भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण ने झारखंड सरकार और रामगढ़ सेना छावनी के सहयोग से रामगढ़, झारखंड में ''एंटी-कॉम्प्रोमाइज मीट'' विषय पर एक पराक्रम दिवस कार्यक्रम का भी आयोजन किया।

भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण (AnSI) ने नए सहयोगात्मक प्रयासों की भी शुरुआत की। इसके अंतर्गत बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के साथ एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए गए, जिसका उद्देश्य अंत:विषय अनुसंधान, शैक्षिक पहलों को बढ़ावा देना तथा ठभ्न परिसर में एक फील्ड स्टेशन की स्थापना करना है। इसी अवधि में, अंडमान एवं निकोबार प्रशासन के जनजातीय कल्याण निदेशालय के सहयोग से ''डुगोंग क्रीक, लिटिल अंडमान में ओंगे जनजाति द्वारा अनुभव एवं अभिलेखित पर्यावरणीय परिवर्तन'' विषयक अध्ययन आरंभ किया गया। एक अन्य महत्वपूर्ण सहयोगात्मक अनुसंधान पहल शिलांग स्थित उत्तर-पूर्व क्षेत्रीय केंद्र द्वारा की गई। इस क्षेत्रीय केंद्र ने नागालैंड में परीक्षण उत्खनन और क्षेत्रीय जांच के दौरान जापान एसोसिएशन फॉर रिकवरी एंड रिपैट्रिएशन ऑफ वॉर कैजुअल्टीज(JARRWC) के प्रतिनिधियों को सहयोग प्रदान किया। हमें आशा है कि इन अनुसंधान निष्कर्षों और प्रसार गतिविधियों से शिक्षाविदों तथा आम जनता दोनों को लाभ प्राप्त होगा।

डॉ. एम.शशिकुमार
संयुक्त निदेशक

उपलब्धि

हाल ही में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (BHU) में पुरामानवविज्ञान और पॉपुलेशन जीनोमिक्स अनुसंधान पर दो-दिवसीय सहयोगात्मक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें देश-विदेश से आए प्रतिष्ठित विद्वानों, शोधकर्ताओं और शिक्षाविदों का एक समूह शामिल हुआ। यह संगोष्ठी जैविक मानवशास्त्र और पॉपुलेशन जीनोमिक्स के तीव्रता से विकसित हो रहे क्षेत्रों में अंतर्विषयी संवाद को बढ़ावा देने और भविष्य में सहयोग की संभावनाओं का अन्वेषण करने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच सिद्ध हुई। कार्यक्रम का उद्घाटन भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण (AnSI) के निदेशक प्रो. बी.वी.शर्मा के संबोधन के साथ हुआ, जिसमें उन्होंने भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण में चल रहे जैविक मानवशास्त्र संबंधी शोधों की वर्तमान स्थिति की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने प्रमुख निष्कर्षों, चल रही परियोजनाओं और महत्वपूर्ण उपलब्धियों पर प्रकाश डाला, जिन्होंने भारतीय उपमहाद्वीप में मानव जैविक विविधता और प्रागैतिहासिक अध्ययन की समझ को आगे बढ़ाया है।संगोष्ठी का शैक्षणिक कार्यक्रम चार विषयगत सत्रों में विभाजित था, जिनमें प्रत्येक सत्र पेलियोएंथ्रोपोलॉजी और जीनोमिक अनुसंधान के विशिष्ट पहलुओं को समर्पित था। इन सत्रों में विशेषज्ञों ने उभरती हुई कार्यप्रणालियों, नवीन खोजों और अंतर्विषयी दृष्टिकोणों पर विचार-विमर्श किया, जो भविष्य के अनुसंधान प्रयासों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।

संगोष्ठी का एक प्रमुख आकर्षण पद्मश्री से सम्मानित डॉ. थंगराज का विशेष व्याख्यान था, जिनके पॉपुलेशन जेनेटिक्स और जीनोमिक्स में महत्वपूर्ण योगदान को व्यापक रूप से सराहा गया है। उन्होंने अपने व्याख्यान में भारतीय जनसंख्या की आनुवंशिक विरासत के उन पहलुओं पर गहन प्रकाश डाला, जिसमें उन्नत जीनोमिक विश्लेषण के माध्यम से प्राचीन वंशानुगत रेखाओं का पता लगाया गया है। उनके इस व्याख्यान ने प्रतिभागियों के बीच सार्थक और गहन चर्चा को प्रेरित किया। संगोष्ठी का समापन में सभी सहभागियों ने साझा संकल्प किया कि वे सहयोगात्मक नेटवर्क को सुदृढ़ करेंगे, संयुक्त अनुसंधान पहलों को प्रोत्साहित करेंगे और पेलियोएंथ्रोपोलॉजी तथा पॉपुलेशन जीनोमिक्स के क्षेत्र में वैज्ञानिक ज्ञान को आगे बढ़ाएंगे, जिससे व्यापक शैक्षणिक और वैज्ञानिक समुदाय को लाभ मिल सके।

डॉ. अभिषिक्ता घोष राय
अधीक्षण मानव विज्ञानी

संस्थागत विशेष

"पराक्रम दिवस 2026" के अंतर्गत आयोजित शैक्षणिक कार्यक्रमों की श्रृंखला में 24 जनवरी 2026 को भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण के श्री विजय पुरम कार्यालय के सम्मेलन कक्ष में "राष्ट्र निर्माण, राष्ट्रीय एकीकरण एवं नेताजी सुभाष चंद्र बोस के विचार" विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में विद्वानों एवं विशेषज्ञों ने नेताजी के राष्ट्र निर्माण संबंधी दृष्टिकोण, राष्ट्रीय एकता के प्रति उनके योगदान तथा उनके दूरदर्शी विचारों पर विस्तार से चर्चा की। वक्ताओं ने इस बात पर बल दिया कि नेताजी की विचारधारा आज भी समकालीन भारत के लिए प्रासंगिक है और युवा पीढ़ी को उनसे प्रेरणा लेकर राष्ट्र के विकास में सक्रिय योगदान देना चाहिए।

सर्वेक्षण के मुख्यालय कोलकाता के शारीरिक मानवविज्ञान प्रभाग के अधिकारियों द्वारा अमेरिकी वाणिज्य दूतावास के अमेरिकन सेंटर की निदेशक सुश्री एलिजाबेथ ली तथा मुख्य रणनीतिक संचार, प्रेस एवं सोशल मीडिया के प्रमुख श्री समीक घोष के साथ बैठक आयोजित की जिसका उद्देश्य वर्तमान सहयोगों पर चर्चा करना तथा संयुक्त राज्य अमेरिका की डिफेन्स पीओडब्ल्यू/एमआईए अकाउंटिंग एजेंसी (DPAA) के साथ समझौता ज्ञापन (MoU) हेतु दिशानिर्देशों पर विचार-विमर्श करना था। साथ ही, भारत में अमेरिकी DPAA मिशन के दौरान प्राप्त मानव अवशेषों के सुरक्षित भंडारण से संबंधित विषयों पर भी विस्तार से चर्चा की गई।

भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण तथा इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय के मध्य शैक्षणिक सहयोग के अंतर्गत, भोपाल स्थित IGRMS के संग्रहालय विज्ञान (Museology) में पीजी डिप्लोमा के विद्यार्थियों हेतु एक माह का इंटर्नशिप कार्यक्रम, सर्वेक्षण के दक्षिणी क्षेत्रीय केंद्र, मैसूर स्थित क्षेत्रीय मानवविज्ञान संग्रहालय में प्रारंभ किया गया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत छात्रों को समकालीन संग्रहालय प्रथाओं एवं मानवविज्ञान अनुसंधान पद्धतियों के गहन व्यावहारिक प्रशिक्षण दिए गये।

संस्थागत विशेष

सर्वेक्षण द्वारा 11 मार्च 2026 को मुख्यालय, कोलकाता में एक राष्ट्रीय स्तर की कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का उद्देश्य ''ग्रामीण भारत में जल जीवन मिशन (JJM) के माध्यम से परिवर्तनकारी बदलाव: मानवविज्ञान दृष्टिकोण से सामाजिक प्रभाव मूल्यांकन'' शीर्षक राष्ट्रीय परियोजना के अंतर्गत राजस्थान, गुजरात, तेलंगाना और असम राज्यों के लिए तैयार की गई रिपोर्टों की समीक्षा करना था। कार्यशाला की अध्यक्षता भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण के निदेशक प्रोफेसर बी. वी. शर्मा ने की। विचार-विमर्श के दौरान कोलकाता मुख्यालय के संयुक्त निदेशक डॉ. एम. शशिकुमार तथा उपनिदेशक (सांस्कृतिक) एवं जल जीवन मिशन परियोजना के प्रधान अन्वेषक डॉ. अमित कुमार घोष भी उपस्थित रहे।

भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण के पश्चिमी क्षेत्रीय केंद्र, उदयपुर द्वारा 16–17 मार्च, 2026 को ''गुणात्मक डेटा के विश्लेषण एवं प्रस्तुतीकरण'' विषय पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफलतापूर्वक आयोजन हाइब्रिड मोड में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण के निदेशक प्रो. बी. वी. शर्मा के उद्घाटन भाषण से हुआ, जिसमें उन्होंने मानवविज्ञान संबंधी डेटा के गुणात्मक विश्लेषण में इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रमों के महत्व पर प्रकाश डाला। डॉ. एम. शशिकुमार, संयुक्त निदेशक ने स्वागत भाषण दिया तथा मानवविज्ञान अनुसंधान के लिए ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रमों की आवश्यकता पर बल दिया। इस कार्यक्रम को विद्वत जनों डॉ. स्निग्धा विष्णोई, डॉ. माथंगी मारिया कुमार, डॉ. सिपॉय सर्वेश्वर एवं डॉ. सुमन नाथ द्वारा संबोधित किया गया। विभिन्न क्षेत्रीय केंद्रों के वैज्ञानिक कर्मचारियों ने शैक्षणिक सत्रों में सक्रिय रूप से भाग लिया।

सर्वेक्षण के उप-क्षेत्रीय केंद्र, जगदलपुर (छत्तीसगढ) द्वारा ''भारत की शैलचित्र धरोहर: बस्तर के विशेष संदर्भ में'' शीर्षक से एक शोध परियोजना प्रारंभ की गई है। इसके अंतर्गत छत्तीसगढ़ के बस्तर संभाग के विभिन्न जिलों में क्षेत्रकार्य किया जा रहा है, जिसमें शैलचित्र स्थलों के माध्यम से प्राचीन मानव साक्ष्यों की खोज एवं पहचान की जा रही है। यह अध्ययन बस्तर के शैलचित्र स्थलों की पहचान एवं व्यवस्थित प्रलेखन पर केंद्रित है।

सर्वेक्षण के मुख्यालय सहित अन्य क्षेत्रीय केन्द्रों के शोधकर्ताओं ने 21 फरवरी, 2025 से 23 फरवरी, 2026 तक तमिलनाडु के पुदुचेरी विश्वविद्यालय में आयोजित भारतीय मानवविज्ञान कांग्रेस 2026 में सहभागिता की एवं निर्धारित सत्रों में अपने शोध पत्र प्रस्तुत किये।

नर्मदा मानव : भारत का प्राचीनतम मानव जीवाश्म और दक्षिण एशिया में मानव विकास का रहस्य

1. परिचय : नर्मदा घाटी का मानव इतिहास

भारत की पवित्र नर्मदा नदी केवल आध्यात्मिक धारा नहीं, अपितु मानव विकास की प्राचीन सभ्यताओं की साक्षी भी है। मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले में स्थित नर्मदा घाटी से प्राप्त नर्मदा मानव (Narmada Man) जीवाश्म दक्षिण एशिया का सबसे पुराना और महत्वपूर्ण मानव अवशेष है। 1982 में हथनौरा स्थल पर खोजा गया कपालाशय (calvarium) मध्य प्लीस्टोसीन काल (लगभग 2.5 लाख वर्ष पूर्व) का है। यह होमो इरेक्टस, पुरातन होमो सेपियन्स या होमो हाइडेलबर्गेसिस का प्रतिनिधित्व करता है, जो आउट ऑफ अफ्रीका सिद्धांत को मजबूत करता है। नर्मदा घाटी से एच्यूलियन से अपर पैलियोलिथिक तक के साक्ष्य पाए गए हैं, जो भारत को वैश्विक पुरामानवविज्ञान का केंद्र बनाते हैं।

2. खोज का इतिहास और भू-स्तरीय संदर्भ

19 वीं शताब्दी से नर्मदा घाटी पुरातत्वविदों को आकर्षित करती रही, किंतु मानव जीवाश्म की खोज 5 दिसंबर 1982 को हुई। भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (GSI) के डॉ. अरुण सोनकिया ने नदी के उत्तरी तट पर हथनौरा (22°50'N, 77°50'E) से दायीं ओर का कपालाशय प्राप्त किया। यह सुरजकुंड विन्यास (फॉर्मेशन) के U1 कंक्रीटेड ग्रेवल स्तर से है। निकटवर्ती नेतनखेरी (3 किमी पूर्व) से 2012 में ए.आर. संख्यांन टीम ने बायीं फीमर (NTK-F07-05) और ह्यूमरस (NTK-F-02-07) खोजे। हाथनौरा से पूर्व में दो क्लैविकल और 9वीं पसली भी मिलीं।

भू-स्तरीय रूप से, सुरजकुंड विन्यास (फॉर्मेशन) (मध्य प्लीस्टोसीन) के U1-U3 स्तर 250-150 हजार वर्ष पूर्व के हैं, जबकि ऊपरी बनेटा विन्यास (फॉर्मेशन) 75 हजार वर्ष पूर्व के टोबा ऐश (YTA) से नीचे है। इलेक्ट्रान स्पिन रेजोनेन्स (ESR) डेटिंग से 236 हजार वर्ष पूर्व की आयु सिद्ध हुई। ये स्थल नियो-टेक्टॉनिक गतिविधियों से प्रभावित हैं, जो जीवाश्म संरक्षण में सहायक सिद्ध हुए।

3. शारीरिक विशेषताएँ और वर्गीकरण

कपालाशय घना, गोलाकार और मजबूत है। इसकी क्रैनियल क्षमता 1,200 cc, सुप्रा-ऑर्बिटल टोरस प्रमुख, तथा ऑक्सिपुट सपाट है। यह जावा और चाइना के होमो इरेक्टस से मिलता है, किंतु अग्रकपाल ऊँचा होने से पुरातन होमो सेपियन्स की ओर झुकाव दिखाता है। केमरन आदि (2004)ने इसे होमो हाइडेलबर्गेसिस माना।

नेतनखेरी फीमर (81 mm अधोदण्ड (डिस्टल शाफ्ट)) नीएंडरथल जैसा - पार्श्व दण्ड के मध्य स्थित लिनीय अस्पर्य द्वारा निर्मित 'पिलास्टर' कम विकसित, तथा पॉप्लिटियल सर्फेस त्रिकोणीय पाई गई है। ह्यूमरस (84 mm, अनुमानित लंबाई 240 mm) में लिटिल-निकोबार निवासियों जैसा, रेडियल सल्कस स्पष्ट पाया गया है। अत: दो होमिनिन प्रकार: (1) बड़ा-मजबूत U1 स्तर का एच्यूलियन शिकारीय तथा छोटा U2-U3 का मोड-3 उपकरणों का प्रयोग करने वाला, अनुमानित हैं। यह पिग्मी-जैसे पूर्वजों की निरंतरता दर्शाता है।

4. संबद्ध पुरातत्व और जीवाश्म

U1 स्तर से मेगा-फॉना: एलीफस नोमैडिकस, स्टेगोडॉन इंसिग्नेसा, इक्वस नोमैडिकस, हेक्साप्रोटोडॉन नोमैडिकस, बोस नोमैडिकस। एच्यूलियन उपकरण-हैंडएक्स, क्लीवर, पिक्स-(लगभग 100+) पाए गए हैं। U2-U3 से मिडिल पैलियोलिथिक ब्लेड, स्क्रेपर पाए गए हैं। नेतनखेरी से प्रथम हड्डी उपकरण स्पैचुला, बोरर, बयूरिन, आल्स पाए गए हैं जो अपर पैलियोलिथिक का प्रमाण हैं । इक्वस जबड़े में एच्यूलियन टूल फँसा मिला, जो समकालीनता सिद्ध करता है। ये साक्ष्य टोबा विंटर (75 kya) में मानव उत्तरजीविता दिखाते हैं।

पसली

5. विकासवादी महत्व

नर्मदा मानव सिद्ध करता है कि अफ्रीका से 1.8 मिलियन वर्ष पूर्व प्रारंभ होमो इरेक्टस प्रवास भारत पहुँचा। यहाँ मॉड-2 एच्यूलियन से मॉड-3 संक्रमण के मध्य हुआ। छोटे होमिनिन अरेबियन पेनिन्सुला मार्ग से पूर्व-टोबा आए, हड्डी तकनीक से जीवित रहे। इनमें पाया गया mt DNA M-हैपलोग्रुप (लगभग 60 हजार वर्ष पूर्व) मुंडा और अंडमान पिग्मी में पाया जाता है, जो निरंतरता दर्शाता है। फा ह्वेन् (श्रीलंका, 30 हजार वर्ष पूर्व) और दर्रा-ए-कुर (अफगानिस्तान) से अंतर रिप्लेसमेंट बनाम कंटिन्यूटी बहस को बढ़ावा देता है। इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि नर्मदा दक्षिण एशिया में आधुनिक मानव उद्भव का स्रोत है।

हंसली या कॉलर बोन

6. वर्तमान अनुसंधान और चुनौतियाँ

2026 तक भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण के अन्वेषण जारी हैं। प्राचीन-DNA विश्लेषण, सीरियल डेटिंग और पैलियोक्लाइमेट अध्ययन तथा मानसून प्रभाव खोज वर्तमान में की जा रही हैं। खुदाई स्थलों पर नदी कटाव, अवैध खुदाई, संरक्षण आदि जैसी अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। जिनसे निपटने के लिए यूनेस्को स्तर पर संरक्षण आवश्यकता है। नर्मदा मानव आदिवासी संस्कृतियों जैसे भील, गोंड की प्राचीन परम्परायें नर्मदा परिक्रमा को वैज्ञानिक आयाम देता है। नर्मदा मानव भारत की प्राचीन जड़ों का प्रतीक है। यह 2.5 लाख वर्ष से मानव अनुकूलन, विविधता और उत्तरजीविता का प्रतीक है। यह नर्मदा घाटी को विश्व पटल पर स्थापित करता है, जहाँ होमो इरेक्टस से होमो सेपियन्स का विचलन हुआ। भविष्य में होने वाले अनुसंधान इसे और समृद्ध करेंगे।

लेखक :
डॉ. मंजुलिका गौतम
पुरामानवविज्ञान (पैलियोएंथ्रोपोलॉजी) अनुभाग

प्रतिष्ठित आयोजन- पराक्रम दिवस

नेताजी सुभाष चंद्र बोस की 129वीं जयंती के उपलक्ष्य में भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय द्वारा श्री विजयपुरम, अंदमान एवं निकोबार में दिनांक 23 से 25 जनवरी, 2026 की अवधि में ''पराक्रम दिवस समारोह 2026'' का आयोजन किया गया। भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण, को इस कार्यक्रम हेतु नोडल कार्यालय के रूप में चुना गया था। इसी कार्यक्रम के अंतर्गत भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण द्वारा नेताजी सुभाष चंद्र बोस द्वीप, अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह में दिनांक 23 जनवरी 2026 से एक माह की अवधि तक ''नेताजी सुभाष चंद्र बोस का जीवन और विरासत'' विषय पर एक विशेष प्रदर्शनी आयोजित की गई जिसका मुख्य उद्देश्य नेताजी के जीवन और स्वतंत्रता संग्राम में उनके अविस्मरणीय योगदान की जानकारी को जनसामान्य तक पहुँचाना तथा उनमें देशभक्ति की भावना को सुदृढ़ करना था। माँ भारती के वीर सपूत, अदम्य साहस और दृढ़ संकल्प के प्रतीक नेताजी सुभाष चंद्र बोस को उनकी जयंती पर 'ड्रोन श्रद्धांजलि' समर्पित की गयी। 'पराक्रम दिवस समारोह' के उद्घाटन समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में अंदमान और निकोबार द्वीप समूह के उपराज्यपाल महामहिम एडमिरल डी.के.जोशी जी उपस्थित थे। सचिव, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, श्री विवेक अग्रवाल ने ''पराक्रम दिवस 2026'' के उद्घाटन समारोह के अवसर पर नेताजी स्टेडियम, श्री विजय पुरम में उपस्थित जनसमूह को संबोधित किया और कहा कि हर भारतवासी नेताजी के देश को स्वतंत्रता के मार्ग पर अग्रसर करने और उनके साहस, दृढ़ संकल्प और प्रखर नेतृत्व को सदैव याद रखेगा।

सुभाष संगीतांजलि- पराक्रम दिवस 2026 के अवसर पर नेताजी सुभाष चंद्र बोस के अदम्य साहस और अमर विरासत को समर्पित एक संगीतमय श्रद्धांजलि का आयोजन किया गया जिसमे देश भर के प्रसिद्ध उस्तादों और प्रमुख समकालीन कलाकारों द्वारा देशभक्ति और भावपूर्ण प्रस्तुतियों से सजी एक संगीतमय संध्या का आयोजन किया गया। 23 जनवरी, 2026 को नेताजी स्टेडियम में विश्वविख्यात सरोद वादक उस्ताद अमजद अली खान ने अपने सुपुत्रों अमान अली बंगश और अयान अली बंगश के साथ एक यादगार प्रस्तुति दी।

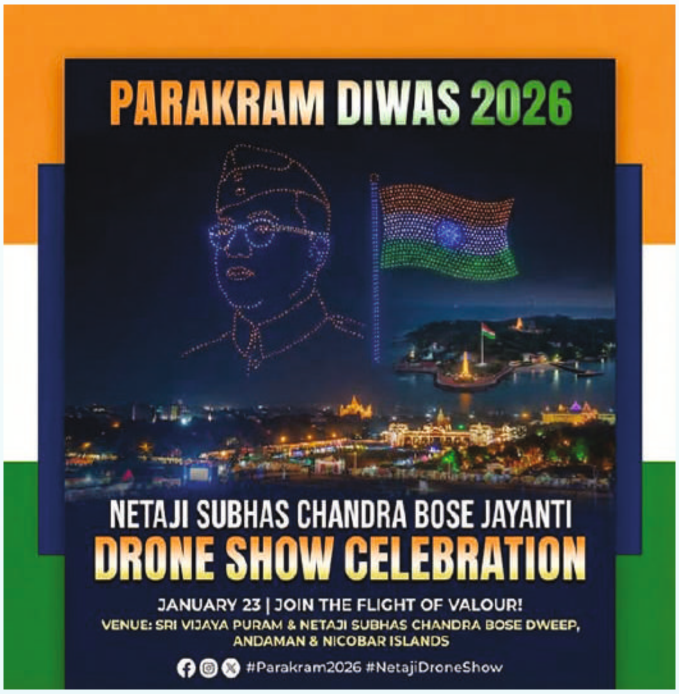

कार्यक्रम में शास्त्रीय संगीत की समृद्ध परंपरा का उत्कृष्ट प्रदर्शन देखने को मिला, जिसमें पिता-पुत्र की सरोद जुगलबंदी की स्वरलहरियों ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। संगीत प्रेमियों ने इस दुर्लभ और भावप्रवण प्रस्तुति में तकनीकी दक्षता और आत्मीय अभिव्यक्ति का संतुलन स्पष्ट रूप से अनुभव किया। इस अवसर पर अन्य उत्कृष्ट कलाकारों पापोन, प्रतिभा सिंह बघेल, रघु दीक्षित, मंगली ने अपनी प्रस्तुतियों से उपस्थित दर्शक दीर्घा में देश प्रेम एवं उत्साह भर दिया। कार्यक्रम की संकल्पना एवं निर्देशन सौरेंद्रो एवं सौम्योजित द्वारा किया गया। कार्यक्रम के दौरान मंच पर स्थानीय कलाकारों द्वारा नृत्य प्रस्तुतियाँ भी की गयी।

इस अवसर पर साहस, स्वतंत्रता और गर्व को समर्पित नेताजी के सम्मान में एक ड्रोन श्रद्धांजलि प्रदर्शित की गयी जिसमें 400 ड्रोन के माध्यम से नेताजी के जीवन के महत्वपूर्ण घटनाओं को इस ड्रोन शो में दिखाया गया। अंडमान में ऐसी प्रदर्शनी का आयोजन अपनी तरह का नया एवं विशेष था।

संस्कृति मंत्रालय के सचिव श्री विवेक अग्रवाल ने 23 जनवरी 2026 को आईटीएफ ग्राउंड, श्री विजय पुरम का दौरा कर आगामी कार्यक्रमों की व्यवस्थाओं का निरीक्षण किया। 24–25 जनवरी 2026 के इन कार्यक्रमों में नाट्य प्रस्तुतियाँ, लोक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा प्रदर्शनी शामिल थे, जिनके माध्यम से नेताजी सुभाष चंद्र बोस के जीवन, दृष्टिकोण और विरासत को प्रदर्शित किया गया।

प्रतिष्ठित आयोजन- पराक्रम दिवस

25 जनवरी, 2026 को भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार ने आजाद हिंद फौज (INA) के उन परिवारजनों को सम्मानित किया, जो देश/विदेश के विभिन्न भागों से इस कार्यक्रम में सम्मिलित होने आए थे। इस अवसर पर विशेष रूप से श्री सुरेंद्र भोंसले (जनरल जगन्नाथराव भोंसले के पौत्र) का उल्लेखनीय योगदान रहा। विदेश से जो INA परिवार के सदस्य कार्यक्रम में शामिल हुए, उनमें अमेरिका से श्री बालाजी, सुनील कुमार लंका से तथा थाईलैंड से श्री रवि भाटिया प्रमुख थे। अपने स्वागत भाषण में निदेशक, भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण प्रो. बी.वी. शर्मा, ने सभी सुदूर क्षेत्रों से आये गणमान्य अतिथियों और प्रतिभागियों का कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने के लिए आभार व्यक्त किया। उनकी उपस्थिति के सम्मान में भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण ने "Subhas and the INA : Legends, Myths and Memories" विषय पर एक लोकप्रिय व्याख्यान का आयोजन किया, जिसमें भारत और थाईलैंड से आए INA परिवारजनों ने अपने पारिवारिक इतिहास और INA से जुड़े व्यक्तिगत अनुभव साझा किए। उमा महेश्वरी ने सिंगापुर से ऑनलाइन माध्यम द्वारा अपनी प्रस्तुति दी। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में ज्योति कुमारी, सचिव, माननीय उपराज्यपाल, अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह कार्यालय तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में पर्ल देवदास, प्राचार्य जेएनआरएम कॉलेज, श्री विजय पुरम उपस्थित रहीं। कार्यक्रम का संचालन डॉ नंदिता साहू ने किया।

पराक्रम दिवस के इस समारोह में प्रदर्शनी और आकर्षक गतिविधियों का आयोजन इस प्रकार किया गया जो युवाओं के मन में साहस, नेतृत्व और देशभक्ति की भावना को प्रेरित करे। इसके अंतर्गत नेताजी सुभाष चन्द्र बोस द्वीप पर 23 जनवरी, 2026 से एक माह के लिए नेताजी के जीवन एवं संस्मरणों पर आधारित प्रदर्शनी लगायी गयी।

पराक्रम दिवस के आयोजन का एक और आकर्षण का केंद्र बनी आईटीएफ़ ग्राउंड पर आयोजित सांस्कृतिक संध्या जिसका आयोजन दिनांक 24 और 25 जनवरी को किया गया। इस सांस्कृतिक संध्या में देश के विभिन्न राज्यों से आये लोक कलाकारों ने अपनी प्रस्तुतियाँ दी। कार्यक्रम का आरम्भ अंदमान तथा निकोबार प्रशासन के कला एवं संस्कृति विभाग के कलाकारों द्वारा ''वन्दे मातरम'' गाकर किया गया। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली के कलाकारों द्वारा नेताजी के जीवन पर आधारित एकांकी ''सुभाष जी'' की प्रस्तुति हुई। इसके साथ ही भारतीय लोक कला मंडल, उदयपुर, राजस्थान द्वारा भवाई नृत्य और कठपुतली नाटक कालीबाई का प्रस्तुतीकरण हुआ, केरल के लोक नृत्य कलारिपयट्टू, छतीसगढ़ अभुजमाढ का मलखम्ब, मणिपुर राज्य का थांग-ता और ओड़िशा का पैका अखाडा के कलाकारों द्वारा सुन्दर एवं चमत्कृत करने वाली प्रस्तुतियाँ दी गयी। इस कार्यक्रम में अंदमान और निकोबार के स्थानीय द्वीपों जैसे लिटिल अंदमान हरमिंदरबे, करेन नृत्य, निकोबारी नृत्य, अंदमान में बसे ओराओं, मुंडा और खारिया जनजाति के लोक कलाकारों द्वारा पारंपरिक रांची समुदाय का नृत्य प्रस्तुत किया गया। इस कार्यक्रम को देखने के लिए स्थानीय जन समुदाय बड़ी संख्या में उपस्थित था और उन्होंने इस कार्यक्रम को बहुत सराहा। इस कार्यक्रम का संयोजन क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र द्वारा किया गया था। संपूर्ण कार्यक्रम की संकल्पना भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण द्वारा की गयी।

भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण द्वारा स्कूल के छात्रों के लिए चित्रकारी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें भारत की पारंपरिक एवं सांस्कृतिक सुन्दरता की बाल कलाकारों द्वारा बनाया गया।

राजभाषा विशेष

भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण के पश्चिमी क्षेत्रीय केंद्र, उदयपुर कार्यालय को भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, उदयपुर द्वारा आयोजित वार्षिक राजभाषा समारोह (06 मार्च 2026) के अवसर पर केंद्रीय कार्यालय श्रेणी में द्वितीय पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया। यह सम्मान नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, उदयपुर के अध्यक्ष द्वारा प्रदान किया गया। इस अवसर पर पश्चिमी क्षेत्रीय केंद्र के कार्यालय प्रमुख डॉ. निलांजन खटुआ की उपस्थिति रही। साथ ही राजभाषा कार्यों में सक्रिय योगदान के लिए राजभाषा प्रभारी श्री अजय चौधरी को भी प्रशस्ति प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। यह उपलब्धि संस्थान में हिंदी के प्रभावी उपयोग, राजभाषा नीति के सफल क्रियान्वयन तथा कर्मचारियों की सामूहिक कर्तव्यनिष्ठा का परिणाम है।

भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण, दक्षिण क्षेत्रीय केन्द्र, मैसूर में दिनांक 12-02-2026 को एकदिवसीय ''हिन्दी कार्यशाला'' का आयोजन किया गया द्य कार्यशाला में मुख्य अतिथि एवं वक्ता के रूप में सुश्री गिरिजा कुम्बार, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा), भारतीय स्टेट बैंक, मैसूर को आमंत्रित किया गया द्य सुश्री कुम्बार ने कार्यशाला के दौरान राजभाषा अधिनियम, राजभाषा कार्यप्रणाली एवं प्रशासन में राजभाषा एवं अनुवाद के क्षेत्र में नई तकनीकी आदि के विभिन्न पहलुओं से सभी को अवगत कराया द्य कार्यशाला की अध्यक्षता डॉ. मिठुन सिकदार, कार्यालय प्रमुख, भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण, दक्षिण क्षेत्रीय केन्द्र, मैसूर ने की।

भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण, अंडमान एवं निकोबार क्षेत्रीय केंद्र, श्री विजयपुरम में दिनांक 18-03-2026 को तिमाही हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में मुख्य अतिथि एवं वक्ता के रुप में श्री राजेन्द्र इन्दवर, हिंदी अधिकारीध्उप सचिव (रा.भा.), अंडमान तथा निकोबार प्रशासन एवं सदस्य सचिव (नराकास) को आमंत्रित किया गया, जिन्होंने अपने विचारों एवं अनुभवों से राजभाषा के प्रभावी क्रियान्वयन एवं कार्यालय के कार्यों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने और कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी के प्रभावी क्रियान्वयन में आने वाली समस्याओं को दूर करने से संबंधित कई महत्वपूर्ण सुझाव दिए। कार्यक्रम का शुभारंभ, श्री एन सोमोरजित सिंह, कार्यालय अध्यक्ष के स्वागत भाषण एवं समापन श्री अनुपम दत्ता, सहायक मानवविज्ञानीध्प्रभारी (राजभाषा अनुभाग) के धन्यवाद ज्ञापन के साथ किया गया।

भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण, मध्य क्षेत्रीय केंद्र, नागपुर में 20 मार्च 2026 को तिमाही हिन्दी कार्यशाला का आयोजन कार्यालय प्रधान श्री एस.एस. बारिक की अध्यक्षता में संपन्न हुआ।कार्यशाला को नवाचार के अंतर्गत दो भागों में बांटा गया। प्रथम भाग में 01-01-2024 के पश्चात जुड़े कार्मिकों को प्ळव्-इ।त्डल्ळप् के माध्यम से राजभाषा हिन्दी के आधारभूत पाठ्यक्रम पूर्ण करने हेतु प्रेरित किया गया, जिससे उन्हें राजभाषा के प्रति प्रारंभिक एवं व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त हो सके। द्वितीय भाग में कार्यालय के सभी कार्मिकों के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के ''भारती - बहुभाषी अनुवाद सारथी'', जो अनुवाद हेतु उन्नत एआई प्रौद्योगिकी द्वारा संचालित है, पर विशेष प्रशिक्षण दिया गया।

राजभाषा विभाग के निदेशानुसार सर्वेक्षण के मुख्यालय के हिंदी अनुभाग की पहल पर सभी क्षेत्रीय केन्द्रों के राजभाषा कार्मिकों एवं प्रशासन अनुभाग से सम्बंधित कार्मिकों के लिए दिनांक 19-03-2026 को एक ऑनलाइन कार्यशाला का आयोजन किया गया प्इस कार्यशाला में हिंदी अधिकारी एवं कनिष्ठ अनुवादकों द्वारा कक्षाएं ली गयीं जिसका उद्देश्य था कि तिमाही रिपोर्ट को भरने में किन बातों का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए। हिंदी अधिकारी द्वारा प्रशासनिक कार्मिकों से धारा 3(3) एवं नियम 5 का विशेष अनुपालन करने के लिए सुझाव दिया।

जल जीवन मिशन (JJM) के अंतर्गत ग्रामीण भारत में परिवर्तनकारी बदलाव- ओडिशा में मानववैज्ञानिक दृष्टिकोण से सामाजिक प्रभाव का मूल्यांकन

वर्तमान में राष्ट्रीय परियोजना ''ग्रामीण भारत में जल जीवन मिशन (JJM) के अंतर्गत परिवर्तनकारी बदलाव: मानववैज्ञानिक दृष्टिकोण से सामाजिक प्रभाव का मूल्यांकन'' के अंतर्गत ओडिशा राज्य में क्षेत्रकार्य जारी है। इस अध्ययन का उद्देश्य कार्यात्मक घरेलू नल जल की उपलब्धता से उत्पन्न सामाजिक एवं दैनिक जीवन में होने वाले परिवर्तनों को समझना है। कार्यान्वयन में विविधताओं को समझने के उद्देश्य से दो जिलों का चयन किया गया जिसमें नुआपाड़ा, जल जीवन मिशन के उच्च स्तर के कार्यान्वयन का प्रतिनिधित्व करता है और मलकानगिरी, अपेक्षाकृत निम्न स्तर के कार्यान्वयन का प्रतिनिधित्व करता है। इन जिलों से विस्तृत नृवंशविज्ञान अध्ययन हेतु चार गाँवों को नमूने के रूप में चुना गया। अब तक नुआपाड़ा जिले के चिंगारासरा और मारगांव गाँवों में तथा मलकानगिरी जिले के बड़ीगाटा गाँव में क्षेत्रकार्य पूर्ण हो चुका है। वर्तमान में मलकानगिरी के मुटांबा गाँव में डेटा संकलन जारी है।

यह शोध गुणात्मक विधियों का उपयोग करता है, जिनमें घरेलू सर्वेक्षण, साक्षात्कार तथा फोकस ग्रुप चर्चा (FGDs) शामिल हैं, ताकि लाभार्थियों के जीवन के अनुभवों का दस्तावेजीकरण किया जा सके। प्रारंभिक निष्कर्ष संकेत देते हैं कि समय पर और घर तक उपलब्ध सुचारू नल जल की सुविधा ने दैनिक जीवन पर विविध किन्तु महत्वपूर्ण प्रभाव डाले हैं। सबसे उल्लेखनीय परिवर्तनों में से एक है समय की बचत, जिसने विशेष रूप से उन महिलाओं के जीवन को प्रभावित किया जो पारंपरिक रूप से दूरस्थ जल स्रोतों से पानी लाने की जिम्मेदारी निभाती रही हैं। घर पर पानी उपलब्ध होने से महिलाओं को विश्राम, बच्चों की देखभाल तथा वृद्ध परिवारजनों की सेवा के लिए अधिक समय मिल रहा है। इस परिवर्तन से उनके समग्र कल्याण में भी आंशिक सुधार हुआ है।कुछ मामलों में बच रहे इस समय का उपयोग आय-सृजन गतिविधियों में किया गया है, जिससे उनके जीवन में आर्थिक सहयोग मिला है। यद्यपि ऐसे उदाहरण सीमित हैं, फिर भी वे यह दर्शाते हैं कि जल की उपलब्धता आजीविका के तरीके को प्रभावित करने की क्षमता रखती है।इसके अतिरिक्त, लाभार्थियों ने स्वास्थ्य की स्थितियों में सुधार की लगातार सूचना दी है, जिसे वे स्वच्छ और सुरक्षित पेयजल की उपलब्धता से जोड़ते हैं। दूषित जल स्रोतों पर निर्भरता में कमी आने से जल-जनित रोगों की घटनाओं में गिरावट आई है, हालांकि विस्तृत स्वास्थ्य आंकड़ों का संकलन अभी जारी है।

साथ ही, अध्ययन में दोनों जिलों के बीच प्रभाव के स्तर और स्वरूप में अंतर भी देखा गया है, जो असमान कार्यान्वयन तथा स्थानीय सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों को दर्शाता है। ये विविधताएँ बड़े पैमाने पर लागू विकासात्मक हस्तक्षेपों के परिणामों को समझने के लिए संदर्भ-विशिष्ट विश्लेषण के महत्व को रेखांकित करती हैं। जैसे-जैसे क्षेत्रकार्य आगे बढ़ रहा है, यह शोध इस बात की अधिक सूक्ष्म समझ विकसित करने का प्रयास कर रहा है कि जल जीवन मिशन ग्रामीण ओडिशा में सामाजिक संबंधों, लैंगिक भूमिकाओं, स्वास्थ्य व्यवहारों तथा दैनिक जीवन को किस प्रकार प्रभावित कर रहा है। यह अध्ययन ग्रामीण भारत में संरचनात्मक, विकास और सामाजिक परिवर्तन पर व्यापक विमर्श में महत्वपूर्ण योगदान देने की सम्भावना दर्शाता है।

श्री मैनाक चक्रवर्ती, मानवविज्ञानी (सांस्कृतिक)

जल जीवन मिशन के माध्यम से ग्रामीण भारत में रूपांतरणकारी परिवर्तन: एक मानवशास्त्रीय दृष्टिकोण से सामाजिक प्रभाव का मूल्यांकन

जल जीवन मिशन-2019 (JJM) भारत सरकार की एक महत्वाकांक्षी योजना है, जिसका उद्देश्य सभी परिवारों को सुरक्षित, सुलभ और किफायती पेयजल उपलब्ध कराना है। यह कार्यक्रम जल संरक्षण, वर्षा जल संचयन और भूजल पुनर्भरण को बढ़ावा देने के साथ-साथ स्थानीय समुदायों और संस्थाओं को अपने जल संसाधनों के कुशल प्रबंधन के लिए सशक्त बनाने पर विशेष बल देता है।

इन लक्ष्यों को केंद्र में रखते हुए भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण के मध्य क्षेत्रीय केंद्र नागपुर के अगुवाई में इस चरण में महाराष्ट्र राज्य के जलगांव जिले (ज्यादा कार्यान्वयन) के जामनेर प्रखण्ड के हिंगने बीके और पारोला प्रखण्ड के चोरवड़ तथा नंदुरबार जिले (कम कार्यान्वयन) के नंदुरबार प्रखण्ड के समशेरपुर और अक्कलकुवा प्रखण्ड के महुखड़ी गाँवों में 28 दिनों तक मानववैज्ञानिक विधियों और तकनीकों के माध्यम से विभिन्न समुदायों पर जल जीवन मिशन के सामाजिक प्रभाव को समझने का प्रयास किया।

अध्ययन किए गए गाँवों में विभिन्न जनजातीय और जातीय समूह निवास करते हैं। हिंगने बीके में गुज्जर, मराठा, ठाकुर, लेवापटेल, बंजारा, कोली, गोसावी, भील, महार, चमार आदि समुदाय हैं, जबकि चोरवाड़ में मराठा-कुनबी पाटील, कुम्हार, भील, महार, मातंग, चमार, धोबी आदि समुदाय हैं। समशेरपुर गाँव में गुज्जर पटेल, कोली, भील, महार, नाई, शिंपी, पिंजरी, धनगर, सुतार आदि समुदाय रहते हैं, वहीं महुखड़ी गाँव में भील, तड़वी और धनगर समुदाय शामिल हैं। ये गाँव ग्राम-पंचायत के अधीन होने के नाते सरपंच ही इसका प्रमुख होता है एवं उनके आठ सहायक होते हैं जो सभी वार्डों और वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं। सहायकों में महिलाएँ भी शामिल होती है और साथ ही गाँवों का विकास को भी सुनिश्चित करते हैं। ग्रामीण अपने जीवन-यापन के लिए खेती पर निर्भर हैं और इनके मुख्य फसल में कपास, ज्वार, बाजरा, मक्का और केला है एवं ये सिचाई या तो ड्रिफ्ट सिंचाई के माध्यम से या खुला पानी छोड़कर करते हैं।

इस कार्यक्रम के तहत प्रत्येक घर को नि:शुल्क नल-जल कनेक्शन उपलब्ध कराया गया, जिसके लिए ग्रामीणों से कोई अतिरिक्त शुल्क नहीं लिया जाता। हालाँकि, इस व्यवस्था के संचालन एवं रखरखाव (मेंटेनेंस) की जिम्मेदारी ग्राम पंचायत के माध्यम से ग्रामीणों को निभानी होती है। इसउद्देश्य से प्रत्येक गाँव में पानी समितियों का गठन किया गया है। ग्रामीण दिन में काम व मजदूरी करने जाते हैं इस कारण से कुछ गाँवों व खेड़े में जलमित्र ग्रामीणों की उपलब्धता के अनुसार सुबह और शाम को दो बार पानी की आपूर्ति सुनिश्चित करते हैं, जबकि बाकी बचे गाँवों में जलमित्र 4-5 दिनों के अंतराल पर पानी की आपूर्ति करता है। वर्षा जल को धान के खेतों में बनाए गए तालाबों में संग्रहित किया जाता है, जबकि

घरेलू उपयोग के बाद निकलने वाला पानी घर के आंगन के नीचे बनी हुई सोक गड्डा में चला जाता है, जिससे भूजल पुनर्भरण होता है साथ ही गंदगी न होने से मच्छर जनित बीमारियों जैसे डेंगू और मलेरिया से भी बचाव होता है।

जल जीवन मिशन के अंतर्गत मिलने वाला पानी पीने, घरेलू उपयोग और पशुओं के लिए पर्याप्त है। ग्रामीण इसे साफ, रंग-गंध-रहित और स्वास्थ्य के लिए लाभकारी मानते हैं। अधिकांश लोगों ने पीने और खाना पकाने में इसके उपयोग को सुरक्षित बताया है, साथ ही स्वास्थ्य में सुधार और जल-जनित बीमारियों में कमी दर्ज की गयी है। इस योजना का विशेष सकारात्मक प्रभाव महिलाओं के जीवन पर पड़ा है क्योंकि महिलाओं द्वारा ही ज्यादा पानी लाने का काम किया जाता रहा है। पहले, हैंडपंप की अनुपस्थिति में महिलाओं को दिन में तीन-चार बार 100-200 मीटर की दूरी से पानी लाना पड़ता था। अब उन्हें पानी लाने में समय और श्रम नहीं लगाना पड़ता, वे अपने स्वस्थ्य पर ध्यान दे रही हैं, व सिलाई और छोटे व्यवसाय जैसे कार्यों में अधिक समय दे कर आत्मनिर्भर बन रही हैं। बच्चों की देखभाल और शिक्षा पर भी इसका अच्छा असर पड़ा है साथ ही घर में बुजुर्ग व बीमार हुए सदस्यों का भी देख-भाल कर पा रहें है, क्योंकि महिलायें अब अधिक समय घर और परिवार को दे रही हैं। कुल मिलाकर जल जीवन मिशन महाराष्ट्र के इन ग्रामीण क्षेत्रों में न केवल जल उपलब्धता सुनिश्चित कर रहा है, बल्कि उन्हें जल संरक्षण के प्रति संवेदनशील और सक्रीय भी बना रहा है साथ ही यह सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण और जीवन स्तर में सुधार का भी मजबूत आधार बन रहा है।

क्षेत्र कार्य डायरी

लिटिल अंडमान के डुगोंग क्रीक के ओंगे समुदाय द्वारा दर्ज और अनुभव किए गए पर्यावरणीय परिवर्तन

भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण, अंडमान एवं निकोबार क्षेत्रीय केन्द्र, श्री विजयपुरम के पाँच शोधकर्ताओं की एक टीम ने 20 मार्च से 1 अप्रैल, 2026 के दौरान ''लिटिल अंडमान के डुगोंग क्रीक के ओंगे समुदाय द्वारा दर्ज और अनुभव किए गए पर्यावरणीय परिवर्तन'' (Environmental Changes as Recorded and Experienced by the Onges of dugong Creek, Little Andaman) प्रोजेक्ट के लिए फील्ड वर्क पूरा किया। वर्तमान में, डुगोंग क्रीक में 37 परिवार रहते हैं जिनकी कुल जनसंख्या 140 है । 2004 की सुनामी से पहले, ओंगे समुदाय जैक्सन क्रीक, साउथ बे और डुगोंग क्रीक में बसा हुआ था, जिनकी पूरी आबादी को सुनामी के बाद स्थानांतरित कर डुगोंग क्रीक में बसाया गया क्यूँकी एक स्वस्थ वातावरण सुनिश्चित करता है कि वहाँ के निवासी स्वस्थ और प्रसन्न रहेंगे । इसी स्थानान्तरण ने ओंगे लोगों के कल्याण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं। सकारात्मक पक्ष देखें तो, अंडमान और निकोबार प्रशासन द्वारा स्कूलों, उप-प्राथमिक हेल्थ सेंटरों आदि का नवीनीकरण किया जा रहा है, जिससे उनकी पारंपरिक शिकार और संग्रहण वाली जीवनशैली से स्थिर जीवनशैली की ओर बढ़ रहे संक्रमणकारी चरण को और बेहतर बनाया जा सके। शहद उत्पादन, नारियल की खेती आदि पर विशेष जोर दिया जा रहा है ताकि आबादी वर्तमान सामाजिक-आर्थिक रुझानों के साथ एकीकृत हो सके। ये अवलोकन लिटिल अंडमान में चल रही उस परियोजना का हिस्सा हैं, जिसे भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण के वरिष्ठ पारिस्थितिकीविद् और प्रधान अन्वेषक डॉ. उमेश कुमार की देखरेख में एक शोध दल द्वारा संचालित किया जा रहा है। दल वर्तमान में पारिस्थितिक परिप्रेक्ष्य से नृवंशविज्ञान अध्ययन के तकनीकी और पद्धतिगत पहलुओं पर कार्य कर रहा है, और इससे आगामी क्षेत्र कार्य दौरों में नया मुद्दों के सामने आने की संभावना है। इन सभी का व्यवस्थित रूप से दस्तावेजीकरण किया जाएगा और जनजातीय कल्याण निदेशालय, अंडमान और निकोबार प्रशासन और अंडमान आदिम जनजाति विकास समिति (AAJVS) को रिपोर्ट प्रस्तुत की जाएगी, साथ ही संदर्भ-विशेष सिफारिशें भी दी जाएंगी जिनका उद्देश्य पहचानी गई चुनौतियों को कम करना और ओंगे समुदाय द्वारा दर्ज और अनुभव किए गए पर्यावरणीय परिवर्तनों की बेहतर समझ विकसित करना है।

अद्यतित त्रैमासिक परियोजना

राष्ट्रीय परियोजना ''भारत के पीवीटीजी में गट-माइक्रोबियल जीनोमिक अध्ययन'' मध्य प्रदेश के सहरिया जनजाति के परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण: स्वास्थ्य और बीमारी के तहत जैविक (आनुवंशिक) और सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों की खोज पर एक शोध अध्ययन - मध्य प्रदेश के सहरिया जनजाति के बीच पायलट सर्वेक्षण 2 फरवरी से 8 फरवरी, 2026 तक आयोजित किया गया था और मध्य प्रदेश के ग्वालियर और शिवपुरी जिलों से 12 फरवरी से 2 मार्च, 2026 के बीच क्षेत्र कार्य के द्वारा डेटा संग्रहण किया गया।

भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण, अंडमान एवं निकोबार क्षेत्रीय केन्द्र, श्री विजयपुरम के शोध कर्मियों द्वारा "EHSAS: EXPLORING HEALTHY AND SUCCESSFUL AGEING IN SMART INDIA" नामक राष्ट्रीय परियोजना के अंतर्गत फील्ड वर्क पूर्ण कर अंतिम रिपोर्ट प्रस्तुत कर दी गई है। 16 और 17 मार्च, 2026 को संबंधित शोधकर्ताओं की उपस्थिति में ''परियोजना पर आधारित गुणात्मक आंकड़ों का विश्लेषण और प्रस्तुति'' विषय पर एक कार्यशाला आयोजित की गई।

''ग्रामीण भारत में जल जीवन मिशन के माध्यम से परिवर्तनकारी बदलाव: एक मानवविज्ञानी दृष्टिकोण से सामाजिक प्रभाव मूल्यांकन'' शीर्षक राष्ट्रीय परियोजना का प्रारंभ दिनाँक 14-03-2026 को 30 दिनों की अवधि के लिए किया गया हैं। यह अध्ययन महाराष्ट्र एवं ओडिशा में संचालित किया जा रहा है। इस परियोजना में श्री संदीप दास, अनुसंधान सहयोगी (भाषाविज्ञान) एवं श्रीमती कृष्णा भाटी, अनुसंधान सहयोगी (पारि.) शामिल हैं।

सर्वेक्षण की अन्य महत्वपूर्ण गतिविधियाँ

नई दिल्ली के भारत मंडपम में 10 से 18 जनवरी, 2026 तक आयोजित विश्व पुस्तक मेला 2026 में भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण ने सक्रिय भागीदारी की एवं इसका प्रतिनिधित्व डॉ. चित्तरंजन मंडल और श्री सुभाशीष मंडल द्वारा किया गया। पुस्तक मेले के दौरान सर्वेक्षण के पवेलियन को विशिष्ट अतिथियों की उपस्थिति का सौभाग्य प्राप्त हुआ। पर्यटन और संस्कृति मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने पवेलियन का दौरा कर वहां प्रदर्शित मानवविज्ञान संबंधी शोध प्रकाशनों और सांस्कृतिक विरासत से संबंधित पुस्तकों का अवलोकन किया। इसके अतिरिक्त, विवेक अग्रवाल, सचिव, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 17 जनवरी, 2026 को पवेलियन का भ्रमण किया गया और सर्वेक्षण के कार्यों की सराहना की।

1. सर्वेक्षण के मुख्यालय सहित सभी क्षेत्रीय केन्द्रों में 77वाँ गणतंत्र दिवस अत्यंत हर्षोल्लास, उत्साह एवं गरिमामय वातावरण में मनाया गया। इस विशेष अवसर पर सभी कार्यालय परिसरों को आकर्षक ढंग से सजाया गया, जिससे देशभक्ति का माहौल और भी प्रखर हो उठा। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रत्येक क्षेत्रीय केन्द्र के कार्यालय प्रमुखों द्वारा राष्ट्रीय ध्वज फहराकर किया गया। इस अवसर पर कई स्थानों पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं देशभक्ति गीतों का आयोजन भी किया गया, जिसमें कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

2. परिवहन, पर्यटन एवं संस्कृति संबंधी संसदीय स्थायी समिति की बैठक माननीय सांसद श्री संजय कुमार झा की अध्यक्षता में 11 फरवरी, 2026 को संसद भवन में आयोजित की गई। इस बैठक में भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण (AnSI) द्वारा जनसंख्या जननिकी एवं जैविक मानवविज्ञान के क्षेत्र में चल रहे अनुसंधानों की समीक्षा की गई। इस बैठक में संस्कृति मंत्रालय के माननीय सचिव तथा मंत्रालय के अन्य अधिकारी भी उपस्थित रहे। भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण की ओर से प्रो. बी. वी. शर्मा (निदेशक), डॉ. अभिषिक्ता घोष रॉय (अधीक्षण मानवविज्ञानी) तथा डॉ. वेणुगोपाल पी.एन. (मानवविज्ञानी) ने भाग लिया।

3. 13 फरवरी 2026 को भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण के उत्तर-पूर्वी क्षेत्रीय केंद्र, शिलांग द्वारा स्वच्छता कार्ययोजना 2025-26 की चौथी तिमाही के अंतर्गत भंडार कक्ष (स्टोररूम) सुविधाओं में सफलतापूर्वक सफाई अभियान संचालित किया गया। इस पहल में सभी कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया, जो स्वच्छता बनाए रखने तथा स्वस्थ कार्य वातावरण के प्रति सामूहिक प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

सर्वेक्षण की अन्य महत्वपूर्ण गतिविधियाँ

4. निदेशक महोदय ने उप-क्षेत्रीय केंद्र, जगदलपुर का दौरा किया, जहाँ उन्होंने नए कार्यालय भवन-सह-संग्रहालय एवं ऑडिटोरियम के निर्माण कार्य की प्रगति का निरीक्षण किया। 01 मार्च को निदेशक ने कार्यालय प्रमुख एवं आंतरिक भवन निगरानी समिति के सभी सदस्यों के साथ निर्माण स्थल का निरीक्षण किया। इस दौरान केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग (Central Public Works Department), रायपुर के मुख्य अभियंता तथा उनकी टीम, साथ ही CPWD, जगदलपुर के कार्यपालन अभियंता एवं उनकी टीम के साथ विभिन्न समस्याओं एवं चुनौतियों पर विस्तार से चर्चा की गई।

5. भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण, मध्य क्षेत्रीय केंद्र, नागपुर द्वारा दिनांक 04 मार्च 2026 को ''नागरिक सेवा संकल्प'' विधिवत् ग्रहण किया गया। यह संकल्प 24 फरवरी 2026 को प्रधानमंत्री कार्यालय के नवनिर्मित परिसर ''सेवा तीर्थ'' में माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में आयोजित केन्द्रीय मंत्रिमंडल की ऐतिहासिक प्रथम बैठक में लिए गए संकल्प के क्रम में दोहराया गया।

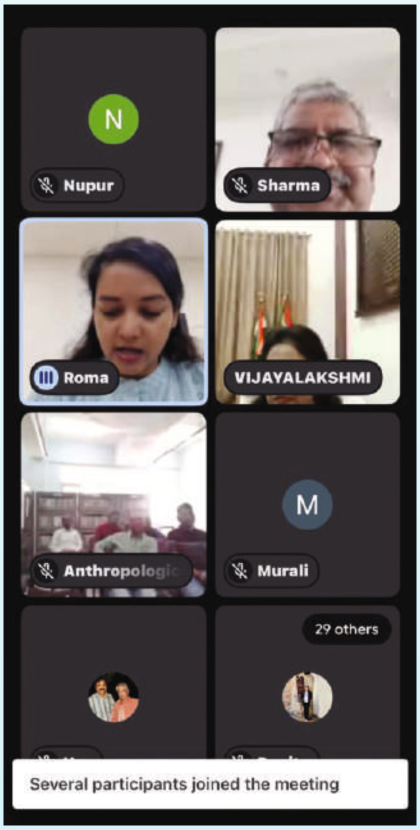

6. मुख्यालय, भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण द्वारा 9 मार्च, 2026 को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर ऑनलाइन कार्यक्रम का आयोजन किया जिसमें मुख्यालय और सभी क्षेत्रीय एवं उप-क्षेत्रीय केंद्रों के कार्मिकों ने भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ निदेशक प्रो. बी.वी. शर्मा के स्वागत भाषण से हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में बिहार सरकार की अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. एन. विजयलक्ष्मी, आईएएस को आमंत्रित किया गया । अपने संबोधन में उन्होंने जीवन के विभिन्न पहलुओं पर एक व्यक्ति और समाज के सदस्य के रूप में महिलाओं द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियों और संघर्षों पर अपने अनुभव और दृष्टिकोण को साझा किए।

कंकण (या बाजड़ी)

कंकण (या बाजड़ी) मध्य प्रदेश के इंदौर क्षेत्र की ***भील जनजाति*** की महिलाओं द्वारा पहना जाने वाला एक पारंपरिक चांदी का कंगन है, जिसका गहरा सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व है। यह मुख्यत: विवाहित महिलाओं से जुड़ा होता है और वैवाहिक स्थिति तथा वयस्कता का महत्वपूर्ण प्रतीक माना जाता है। हालांकि अविवाहित लड़कियां कभी-कभी हल्के आभूषण पहनती हैं, परंतु भारी और प्रमुख कंकण आमतौर पर विवाह के बाद ही धारण किया जाता है और यह महिला के नए सामाजिक दायित्वों को दर्शाता है।

ये कंगन प्राय: चांदी या मिश्र धातु से बने होते हैं और अपनी मोटी, ठोस और मजबूत बनावट के लिए पहचाने जाते हैं। इन्हें हाथ की कलाई या भुजा (फोरआर्म) पर एक जोड़ी या कई संख्या में पहना जाता है। आधुनिक आभूषणों की तरह ये केवल सजावट के लिए नहीं होते, बल्कि अक्सर नाप के अनुसार बनवाए जाते हैं और लंबे समय तक लगातार पहने जाते हैं। कई बार इन्हें उतारने के लिए विशेष सहायता की आवश्यकता होती है, जो इनके सांस्कृतिक महत्व को दर्शाता है।

कंकण प्राय: विवाह या अन्य महत्वपूर्ण अवसरों पर दिए जाते हैं और महिला के दैनिक जीवन का हिस्सा बन जाते हैं। इन्हें त्योहारों, धार्मिक अनुष्ठानों और पारंपरिक नृत्यों के दौरान विशेष रूप से प्रदर्शित किया जाता है, जिससे सामुदायिक पहचान मजबूत होती है। सामाजिक रूप से, कंगनों की संख्या और वजन परिवार की आर्थिक स्थिति और प्रतिष्ठा को भी दर्शाते हैं तथा यह संचित संपत्ति का रूप भी होते हैं।

धार्मिक और प्रतीकात्मक रूप से कंकण को शुभ माना जाता है और यह वैवाहिक सुख, उर्वरता तथा परिवार के कल्याण से जुड़ा होता है। इसका गोल आकार निरंतरता, पूर्णता और जीवन चक्र का प्रतीक है। साथ ही, इसे नकारात्मक शक्तियों से रक्षा प्रदान करने वाला भी माना जाता है। इस प्रकार, कंकण केवल आभूषण नहीं बल्कि भील समुदाय की परंपरा, पहचान और सांस्कृतिक निरंतरता का महत्वपूर्ण प्रतीक है।

अनुवाद :
शशिबाला पाठक

संपादक :
डॉ नंदिता साहू

PARAKRAM DIWAS 2026
Memorable Moments...

ANTHROPOLOGICAL SURVEY OF INDIA

MINISTRY OF CULTURE
GOVERNMENT OF INDIA

EN 79, Street No. 18, EN Block, Near Collage More,
Sector V, Bidhannagar, Kolkata - 700 091, West Bengal
Email : newsletter@ansi.gov.in • Website : www.ansi.gov.in